मुर्तद होती मुस्लिम लड़कियाँ और हम

Note- अगर आपको क़ौम से हमदर्दी है तो हिम्मत कर के आर्टिकल को पूरा ज़रूर पढ़ें और दूसरे लोगों तक ज़रूर पहुंचाए भले ही अपने नाम से पोस्ट और शेयर करें

☐ आजकल मुस्लिमों के दरमियान सोशल मीडिया पर तूफान बरपा है कि एक बड़ी तादाद में मुस्लिम लड़कियां अपनी मर्ज़ी से ग़ैर मुस्लिमों से खुलेआम शादियाँ कर रहीं हैं और दीन को तर्क कर के शिर्क और कुफ़्र को गले लगा रही हैं जिसकी वजह ज़्यादातर मुस्लिम एक चलाई जा रही लव ट्रैप मुहिम को बता रहे हैं.. जिसकी तहक़ीक़ात करने पर हमने पाया कि यूट्यूब और दीग़र सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर ऐसी हज़ारों वीडियो और कहानियां मौजूद हैं जिन में मुस्लिम लड़कियों को इस्लाम और अपने घर खानदानों से बग़ावत की बुनियाद पर ग़ैर मुस्लिम लड़को से प्यार और शादी करते हुए दिखाया जा रहा है ठीक वैसे ही जैसे कुछ वक़्त पहले टिक टॉक पर पहले कुछ ग़ैर मुस्लिम लड़कियों को हिजाब पहना कर नचाया गया और उसके बाद हज़ारों बेग़ैरत मुस्लिम लड़कियाँ उस प्रोपगेंडा में फंस कर अपने मज़हब की बेहुरमती करते हुऐ टिक टॉक पर फ़हाशी का बाज़ार गर्म करने लगीं...

☐ तो क्या सिर्फ़ किसी प्रोपगेंडा करने भर से कोई ईमान वाला कुफ़्र और शिर्क को अपना लेगा..? अगर ऐसा है तो इस्लामी तारीख़ का कोई वक़्त ऐसा नहीं गुज़रा जब इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ साजिशें न की गई हों फिर इस हिसाब से तो आज दुनिया में इस्लाम का नामों निशान मिट जाना चाहिए था..?? अगर नहीं तो फिर आइये इस पर ईमानदारी से ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं और इसकी अस्ल वजह पर बात करते हैं

☐ क्या कोई ये कह सकता है कि दीन को तर्क कर के कुफ़्र को अपना लेना सिर्फ़ किसी साजिश या किसी के दो चार दिन के बहकावे में आ कर, कर लेने वाला फ़ैसला है..?? नहीं हरगिज़ नहीं... बल्कि इस फ़ैसले की चंद वजूहात हैं जिसमें सबसे बड़ी 2 वजह हैं एक इन लड़कियों का साल दर साल तक हराम की दौलत खाना और ऐश करना और दूसरी साल दर साल तक आवारगी, अय्याशी और ज़िना में मुब्तिला रहना... आप किसी भी मुर्तद लड़की की कहानी को ग़ौर से देखेंगे तो पाएंगे कि वो लंबे वक़्त से किसी ग़ैर मुस्लिम के साथ हराम तरीके से कमाए गए पैसे से ऐश करती हुई और हराम तरीक़ों वाले हराम रिश्ते की अय्याशी करती मिलेगी.. और जब ऐसी लड़कियों की रग रग में हराम बस जाता है और अय्याशियों की बदौलत उनके जिस्मों में कभी ख़त्म न होने वाली हवस पैदा हो जाती है तब अल्लाह उनके दिलों से ईमान की मुहब्बत और आख़िरत का डर निकाल देता है और उनके लिए हिदायत के रास्ते बंद कर के उनको गुमराही में भटकने को छोड़ देता है... लेकिन इन दो वजूहात के पीछे छिपी होती हैं कुछ और वजूहात जैसे- हमारे घरों में दीनी माहौल न होना, सच्चा इल्म अपने बच्चों तक न पहुंचाना, हराम और हलाल की पहचान और नुक़सान न बताना, ज़िन्दगी और आख़िरत का इल्म न देना, सिर्फ़ दुनिया हासिल करने ही होड़ में अपने बच्चों को लगा देना, अपने बच्चों पर नज़र न रखना, आज़ादी और मुहब्बत के नाम पर हद से ज़्यादा खुली छूट देना, बद इल्मी की वजह से दुनिया हासिल करने की खुवाहिशें परवान चढ़ना, घर वालों का अपने बच्चों के औक़ात से महँगे शौक़ पूरे करने की वजह को नज़रअंदाज़ करना, और बहुत से मामलों में उनके बच्चों के ज़रिए लाये जा रहे हराम माल से ख़ुद भी ऐश करना

☐ ये तमामतर वजह अपनी जगह और एक वजह अपनी जगह जिसने इन बेग़ैरत और हराम खाने वाली लड़कियों को इतनी जुर्रत बख़्शी के वो अल्लाह के नबियों, सहाबाओं, बुज़ुर्गान-ए-दीन, अपनी क़ौम और वालिदैन की मुहब्बत

और क़ुर्बानियों को अपने पैरों तले रौंद कर शिर्क और कुफ़्र की हामी होने लगीं और वो वजह है मुस्लिम आवारा और बदचलन लड़कों का ग़ैर मुस्लिम लड़कियों से अपनी अय्याशियों के सबब शादी करना.... क्या कोई बात पायेगा के ग़ैर मुस्लिम लड़कियों से की गई हज़ारों शादियों में से कितनी लड़कियाँ ऐसी थीं जिन्होंने इस्लाम और मुसलमानों के किरदार से मुतास्सिर हो कर किसी मुस्लिम लड़के से शादी की और ख़ुद को सही में ईमान के पहलू में समेट लिया... अगर गिनेंगे तो ये तादाद सिर्फ़ इतनी मिलेगी के आपकी उँगलियाँ भी उसके लिए ज़्यादा निकलेंगी... मगर हमने ये किया के उन बदचलन और फ़हाश मुस्लिम लड़कों की अय्याशीयों और ग़ैर इस्लामी कामों को ये सोच कर ख़ुशी से अपना लिया कि उन्होंने एक लड़की को ईमान में दाख़िल कर दिया जबके उनमें से ज़्यादातर लड़कियां और ख़ुद वो अय्याश लड़के ईमान की कसौटी पर ज़रा खरे न उतरेंगे

□ और जानते हैं ये सब हमारे साथ क्यों हो रहा है..?? इसलिए के हम इस वक़्त सिर्फ़ दुनिया के नहीं बल्कि तमाम इस्लामी तारीख़ के बदतरीन मुसलमान हैं जिनकी बहन बेटियाँ सब कुछ हासिल होते हुए अपनी मर्ज़ी से शिर्क को अपना रही हैं जबकि इस्लामी तारीख़ ऐसे वाक़्यात से भरी पड़ी है जिनमें मुसलमानों ने अपनी इज़्ज़त आबरू और ईमान की ख़ातिर अपने ख़ून से ज़मीने तो रंग दीं लेकिन अपनी ग़ैरत का सौदा नहीं किया, अगर ऐसा न होता तो सैकड़ों सालों से अपना ख़ून बहा रहे अफ़ग़ानी आज हराम की दौलत से ऐश और सुकून की ज़िंदगी गुज़ार रहे होते, फ़िलिस्तीनी कब के आज़ाद हो चुके होते, इराक़, सोमालिया, बर्मा, यमन, लीबिया तबाह न किये गए होते.. आप पूरी इस्लामी तारीख़ में ऐसा शर्म से डूब कर मर जाने वाला एक वाक़या नहीं बता पाएंगे जब इतनी बड़ी तादाद में बिना किसी मजबूरी के ईमान के हामियों ने कुफ़्र को गले लगा लिया हो.. तो फिर ये कुफ़्र की हामी बेग़ैरत लड़कियाँ क्या वाक़ई ईमान वालों के ख़ून से पैदा हैं अगर हाँ तो फिर आज हमको अपने ख़ून और ईमान को हरारत देने की बेहद सख़्त ज़रूरत है वरना वो दिन दूर नहीं जब हम बेटियाँ पैदा होने पर ऐसे ही डरेंगे जैसे अल्लाह के नबी की आमद से पहले अरब के लोग डरा करते थे□□

□ मैंने दो साल पहले एक आर्टिकल #टिकटॉकऔरबेहया_मुसलमान में जब ये लिखा था कि आज इस्लाम के बेशुमार दुश्मन ख़ुद मुसलमानों के घरों में पल रहे हैं तब बहुत से लोगों को बुरा लगा था मगर आज वो ही लोग परेशान हैं कि पता नहीं कब और कौन लड़की उनके आस पास से मुर्तद हो जाये.. अभी तो आपने चंद शादियाँ और शादी के लिए दिए गए सिर्फ़ चंद रजिस्ट्रेशन फॉर्म देखे हैं मगर इस से अलग शिर्क के हामियों के साथ अय्याशी करती हुई मुस्लिम लड़कियों की तादाद सैकड़ों हज़ारों नहीं बल्कि लाखोँ करोड़ों में जा पहुंची है और उनको रोक पाने की कोई एक पहल दूर दूर तक दिखाई नहीं देती.... और ये हमारी इज्तेमाई नाकामी है जिसमें हमारे मदारिस, उलेमा ए दीन, हमारा मुआशरा, हमारे वालिदैन और ख़ुद हम पूरी तरह ज़िम्मेदार हैं.. और ये बेग़ैरत लड़कियाँ हमारी नाकामी से निकली हुई वो कालिख हैं जो अल्लाह ने हम सब के मुँह पर पोत दी है क्योंकि हम इसी के लायक़ थे.. हम दुनिया के वो निकम्मे और बहानेबाज़ मुसलमान हैं जिनके पास अपनी ज़िम्मेदारी और अमल से बचने के हज़ारों बहाने हैं और हर नाकामी के लिए ख़ुद को बेक़सूर साबित करने के भी, अगर दीन के नाम पर हमारे पास अब कुछ बचा है तो वो सिर्फ़ दिखावा और ढोंग है

□ कॉलेज यूनिवर्सिटीयों,पार्कों, रेस्टोरेंटों, सिनेमा हॉलों, बियर बारों, गली मोहल्लों, मेले और बाज़ारों में और इंटरनेट पर बेहयाई करते हुए अपनी क़ौम के नौजवानों को देख कर एहसास होता है कि जैसे इनका दीन, ईमान, आख़िरत और ख़ुदा सब कुछ एक हराम रिश्ते में समा गया है और उस हराम रिश्ते के बिना इनकी ज़िन्दगी का तसव्वुर करना भी नामुमकिन है... क़ौम के नौजवानों पर हराम रिश्तों का ऐसा भूत सवार है कि ख़ुद अपने दीन और

अपने ख़ुदा के हुक्मों को अपने पैरों तले रौंद रहे हैं, आज इन हरामख़ोरों ने हिजाब/पर्दा जैसे पाकीज़ा लिबास को बेहयाई और अय्याशी करने के लिए दुनिया की नज़र से बचने का सबसे आसान ज़रिया बना दिया है, दुनिया का कोई बदतरीन अमल ऐसा नहीं जो आज हिंदुस्तानी मुसलमानों से दूर हो और इसके बावजूद हम काफ़िर और दुश्मने इस्लाम उन ग़ैर इस्लामी लोगों को बताते हैं जो इतनी बेहयाई और दीन की बेहुरमती करने की हिम्मत भी नहीं कर सकते... क्या ख़ुद दीन की इतनी बेहुरमती और हमारे किरदारों में इतनी बेहयाई के बाद भी हमको किसी काफ़िर और दुश्मने इस्लाम की ज़रूरत बाक़ी रह गई है..??

□ सर से पावँ तक अय्याशियों नशे और बेहयाई में डूबे क़ौम के इन नौजवानों से अगर शादी करने को कहा जाए तो तमाम दुनिया की जिम्मेदारियां अपने सर पर गिना देंगे लेकिन अपनी हवस मिटाने को ये किसी कूड़ा बीनने वाली से या किसी गटर साफ़ करने वाले से भी मुँह काला करने में देर नहीं लगाते, शादी के नाम पर इनको अपनी औक़ात से पचास गुना ज़्यादा हराम का माल चाहिए, हूर जैसे लड़का लड़की चाहिए भले ही अपनी शक्ल किसी जानवर से भी बदतर हो, यानी आज हमारे पास जाइज़ और हलाल काम करने को हज़ारों शर्तें हैं लेकिन हरामकारी करने को कोई बंदिश नहीं है□□

□ एक वक़्त था जब रूस सुपर पॉवर था और उसने अपने यहाँ इस्लाम पर पाबन्दी आयत कर दी, मुस्लिम मर्दों को चुन चुन कर मार दिया गया, क़ुरआन और मस्जिदों को शहीद कर दिया, इस्लाम की हर निशानी मिटा दी गई और मुस्लिम औरतों को उनका मज़हब बदल कर अपनी ग़ुलाम बना कर रख लिया गया लेकिन अल्लाह ने उन्ही ग़ुलाम औरतों से ऐसा काम लिया कि उनकी परवरिश और ग़ुलामी के ज़रिए उन ज़ालिमों के बच्चों के दिलों में ईमान की हरारत पैदा कर दी जिनके बाप दादाओं ने रूस से इस्लाम का नामो निशान मिटा दिया था और एक दिन उसी ज़ालिम रूस से टूट कर, 6,7 इस्लामी मुल्क वजूद में आये... मगर ये सब इसलिए मुमकिन हुआ कि ज़ुल्म और मजबूरियों ने उन ग़ुलाम औरतों का ज़ाहिरी मज़हब और हुलिया तो बदल दिया था मगर उनके दिलों से जज़्बा ए ईमानी को न निकाल सका.. मगर इस दौर की ये बदकिरदार लड़कियाँ जो शिर्क के हामियों के बिस्तर गर्म करती फिर रही हैं अगर ये उनसे शादी भी न करें तब भी क्या ये कोई ईमान का हामी पैदा कर पाएंगी नहीं बल्कि इनकी कोख से शैतान के हामी ही पैदा होंगे.. और अल्लाह करे के इनकी कोखें बंजर निकले जिस से ये अपने जैसी हराम और शिर्क में डूबी हुई नस्लें पैदा न कर सकें... इन बेग़ैरत लड़कियों के कारनामे आज उन बुज़ुर्गाने दीन की रूहों को कितनी तक़लीफ़ पहुँचाते होंगे जिन्होंने अपनी अगली नस्लों तक ईमान की दौलत पहुंचाने को अपनी खुशियों की, मासूम बच्चों की, अपने जान ओ माल की क़ुर्बानियां दी थीं

□ सुनो ऐ हवस परस्तों हराम कुफ़्र और शिर्क की ख़ातिर तुम जो आज ईमान से फिर रही हो उस हराम की दौलत , जिस्म की हवस, और ऐशो आराम की उम्र सिर्फ़ 30,40 बरस है उसके बाद तुमको वापस उसी रब की तरफ़ जाना है तुमको जवानी का नशा उतर जाने के बाद एक एक साँस का हिसाब देना होगा, भले ही तुम 30,40 बरस बाद मर जाओ लेकिन तुमको अपनी कोख से निकली हुई नस्ल के उस आख़िरी शख़्स की आख़िरी सांस तक का हिसाब देना होगा जो तुम्हारी हवस और हरामकारी से शिर्क और कुफ़्र के बीच ज़िन्दगी गुज़ारेगा.. इसलिए तुम्हारी शिर्क में मुब्तिला एक एक साँस पर लानत, तुम्हारी हराम में डूबी हुई ज़िन्दगी पर लानत, तुम्हारी आने वाली नस्लों पर लानत और तुम पर बेशुमार लानत, बेशुमार लानत

□ ऐसी 5,6 लड़कियां सोशल मीडिया के ज़रिए मेरे रबिते में आईं जिनको मैं महीनों मेहनत करने के बाद कुफ़्र और

शिर्क के चंगुल से निकालने में कामयाब हो सका लेकिन मैंने उन सब के अंदर गुमराही की कुछ बातें एक सी देखीं जो इस तरह से थीं

☐1- वो तमाम लड़कियाँ मुस्लिम लड़को की ग़ैर मुस्लिम लड़कियों से शादी से मुतास्सिर थीं और उनको ग़लत से रोकने पर उनका पहला जवाब ये ही था के ऐसा लड़के भी तो करते हैं उनको क्यो नहीं रोकते यानी उनको सामने से ये बहुत अच्छे से समझाया गया था कि जब लड़के ऐसा कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं

☐2- तमाम लड़कियां पढ़ी लिखी थीं जो या तो प्राइवेट जॉब में थीं या स्टूडेंट थीं और अपनी मर्ज़ी की ऐश और मज़े की ज़िंदगी जीने की ख्वाहिशमंद थीं यानी उनके लिए दुनिया की ऐश ही हासिले ज़िन्दगी था

☐3- तमाम लड़कियां ग़ैर इस्लामी मुआशरे के असर में थीं और उनका मानना था कि सभी मज़हब एक जैसे होते हैं किसी को भी अपनाना बुरा नहीं है जो उनको अपने जाल में फंसाने वालों ने बहुत मज़बूती से समझाया हुआ था

☐4- तमाम लड़कियों का मानना था कि मुहब्बत का कोई मज़हब नहीं होता वो किसी से भी हो सकती है ये बात और है कि वो मुहब्बत और हरामकारी का फ़र्क़ नहीं जानती थीं

☐5- उन तमाम लड़कियों के ख़्वाब फिल्मों की तरह एक दिन सब अच्छा हो जाने के थे और उनको मौत व आख़िरत की ज़रा भी परवाह नहीं थी यानी उनके ज़हनों पर सिनेमा हावी था

☐6- कुछ लड़कियां नमाज़ भी पढ़ती थी और उनका मानना था कि उनका साथी ग़ैर इस्लामी है तो क्या हुआ वो अपना मज़हब माने हम अपना मानेंगे.. यानी जैसे कोई एहराम पहन कर किसी शराबख़ाने के चक्कर लगाए और कहे कि उसने हज कर लिया, मतलब ये निकला के उनको नमाज़ तो आती थी मगर नमाज़ क्यों पढ़ते हैं इसकी वजह का ज़रा भी इल्म नहीं था

☐7- उनको हराम/ हलाल मौत और आख़िरत, गुनाह और नेकी का इल्म तो था लेकिन उनके अंजाम का ख़ौफ़ बिल्कुल नहीं था यानी उनका मज़हबी अक़ीदा इतना कमजोर था कि उनको लगता था कि जो भी कुछ है वो दुनिया में ही है मरने के बाद का किसने देखा है

☐8- तमाम लड़कियों को मुसलमानों पर ज़ुल्म और ज़्यादती से कोई मतलब नहीं था और उनकी नज़र में सब एक से नहीं थे यानी ताक़त दौलत और ज़ुल्म की तरफ़ माइल थीं

☐9- कुछ लड़कियों की माँ या बहन को उनके हर अमल का इल्म था लेकिन उन्होंने उनको कभी रोकने की कोशिश नहीं की थी

☐ और आख़िर में इन तमाम बातों का लब्बोलुआब ये निकलता है कि आज हमारी क़ौम का पहला मदरसा यानी माँओं का आँचल दीनी इल्म और फिक्र से ख़ाली हो चुका है और दुनियावी ख़्वाहिशों से भरा हुआ है,और इसका सुबूत ये है कि इस वक़्त मुस्लिम मर्दों में मची हुई इतनी हाय तौबा और बुलंद होती आवाज़ों के बीच भी आपको

कोई आम मुस्लिम औरत या लड़की इस मसले पर आवाज़ बुलंद करती हुई दिखाई नहीं देगी□□ साथ ही इन साजिशों का असर लड़के और लड़कियों पर अलग अलग है यानी कोई बहुत गुनाहगार लड़का ग़ैर मज़हबी लड़कियों से बहुत से गुनाह तो कर सकता है मगर अपने ईमान को तर्क करने की शर्त को वो कभी नहीं मानता जिस से साबित होता है कि हमारे मुआशरे की औरतों और लड़कियों तक ईमान की पहुंच इतनी कमज़ोर है कि वो नमाज़ रोज़े को मुस्लिम होने की एक रस्म के तौर पर निभा रही हैं.. आज के नौजवानों तक हर बुरा इल्म मोबाइल के ज़रिए उनके ज़हनों तक हर वक़्त पहुंच रहा है मगर सच्चा और पाकीज़ा इल्म किसी भी ज़रिये से उन तक नहीं पहुंचता क्योंकि हमको दुनिया कमाने से फ़ुरसत ही नहीं है

□ इसलिए अब वक़्त आ गया है कि मुसलमानों को अफ़्रीका के जंगलों, अमेरिका के जंज़ीरों और यूरोप के पहाड़ों तक दीन पहुंचने की फिक्र छोड़ कर अपने घरों तक दीन पहुंचाने के काम पर फौरन लग जाना चाहिए और अपनी औलादों को दुनिया में आने का मक़सद, नेकी और बदी में फ़र्क़, नमाज़ों और तिलाबतों का अस्ल मक़सद, दीन और दुनिया की मोहब्बत, इस्लामी तारीख़, मुहब्बत और हरामकारी में फ़र्क़ और मौत के बाद आख़िरत की ज़िंदगी का सच्चा इल्म देने के काम को ज़िम्मेदारी से अंजाम देने पर लग जाना चाहिए वरना शिर्क और ईमान को बराबर मानने वाले अपने अपने घरों से मुनकिर और मुर्तदों को निकलते हुए देखने को तैयार रहिये

□ और अपनी औलादों तक सच्चा दीन पहुंचाने की हर मुमकिन कोशिश करने के साथ ग़ैर मुस्लिम लड़कियों से होने वाली ऐसी शादियों की मुख़ालिफ़त करनी चाहिए जिन की बुनियाद इस्लाम से मुतास्सिर होना न हो, बिना दहेज़ और कम ख़र्च की शादियों को आम करना चाहिए , शादी अल्लाह के भरोसे पर सही वक़्त पर करनी चाहिए न कि दुनियाबी ख़्वाहिशों की वजह से बहुत देर से, क्योंकि जब तक आप सच्चा दीन और इल्म अपनी औलादों तक नहीं पहुंचाएंगे तब तक आप इस दज्जाली दौर में उनको किसी चार दीवारी में क़ैद कर के भी गुमराही से नहीं बचा सकते इसलिए अब हमारे पास सिर्फ़ एक ये ही आख़िरी रास्ता बचा है अपने ईमान के वजूद को बचाये रखने का

*दोस्तों यह मैसेज सिर्फ अपने तक ही महदूद ना रक्खें अपने दोस्तों को भी शेर करें
इस्लाम की बातें लोगों तक पहुंचाना भी सदका है

नोट शैतान आपको बहुत रोकेगा लेकिन एक बार पूरा मैसेज पढ़ें ज़रूर

शाहनवाज़ हुसैन निजामी सिद्दीक़ी
चेयरमैन
तहरीक इसलाह मुआशरा
दार्जिलिंग
+919983905215